मनुष्य बनो

जुलाई
१९८२

7/82

शरणागति

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

संरक्षक
दयाल फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मंदिर होशियारपुर

राधास्वामी

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ८—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र. ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३२	श्रावण सं० २०३९ वि० जुलाई, १९८२	संख्या ९

प्रार्थना

भक्ति दान गुरु दे मुझे, तू अन्तर्यामी।
शीश झुके पद कमल में, बहु बार नमामी ॥
दाता दानी साइयाँ, सबका हितकारी।
केहि बिधि स्तुति मैं करूँ, तू अन्तर्यामी ॥
गुरु देवन का देव तू, घट घट का वासी।
अगम अपार अखंड नित, सुखमय सुख रासी ॥
सत चित आनन्द रूप की, महिमा अति भारी।
सहज अनादि अनंत विभु, को बरणे पारी ॥
अलख अगाध अथाह बहु, नहीं रंग न रूपा।
राधास्वामी आदि गुरु, अज अमर अनूपा ॥

—×—

फकीर चमन पत्रावली

मैं १९७१ ई० में हजूर के चरणों में गया था। उससे पहले बहुत से सन्त महात्माओं के श्री चरणों के दर्शन कर चुका था, किन्तु पूर्ण ज्ञान व शान्ति मुझे हजूर के चरणों में जाकर मिली। उनके पत्रों द्वारा अपूर्व ज्ञान प्राप्त हुआ। वह आपके सामने भेंट कर रहा हूँ। आशा है आप सब भी पूरा २ लाभ उठावेंगे।

होशियारपुर
१. २६-१०-७१

प्यारे दुर्गादास, राधास्वामी।

पत्र मिला। यह चीज न किताबें पढ़ने से मिलती है न ज्यादा तप और साधन से मिलती है।

कुछ करनी कुछ कर्म गत कुछ पूर्वले लेख।
देखो भाग कबीर के लख से भया अलेख।।

यह वस्तु सतसंग से मिलती है और ठीक मानसिक शक्ति द्वा मिलती है। जब कभी मिलोगे बात चीत करूँगा।

आपका फकी

राधास्वामी धाम

२. ४-२-७२

प्यारे दुर्गादास 'चमन'. राधास्वामी।

मैं बाहिर दौरे पर हूँ। आज दातादयाल की समाधि पर हूँ। और बीस तारीख तक इसी यू० पी० के इलाका में रहूँगा। बाबा सावन सिंह की तरह से रोशन हो जाओगे। मैं मार्च के पहले हफ्ते वापिस जाऊँगा होशियारपुर।

पहले दाता शिष्य भया जिन तन मन अरपा शीश।
पाछे दाता गुरु भया जिन नाम किया बख्शीश।।

आपका फकीर

३. हुण्पुर
१४-३-७२

प्यारे दुर्गादास, राधास्वामी।

पत्र तुम्हारा मिला। मैं २०–२५ अप्रैल ७२ तक होशियारपुर में ही हूँ। जब चाहें मिल सकते हैं। आपका
फकीर

—+—

प्रवचन

संत कादरी बाबा, अनूपशहर रोड, पुरानी चुंगी, अलीगढ़ (उ. प्र.)

संतों से आध्यात्मिक और सांसारिक लाभ प्राप्त करने के सही नियम ! जो केवल सन्तजन के लिये हैं। अन्य व्यक्तियों के लिये नहीं। जो मेरी आत्मा ही ने गुरु बनकर उपदेश किये थे।

(१) जो व्यक्ति सन्तों का जितना आदर सम्मान करेगा उतना ही प्रेम बढ़ेगा और ज्यों ज्यों प्रेम बढ़ेगा, उतना ही उसको आत्मिक ज्ञान प्राप्त होगा। क्योंकि जो व्यक्ति सन्तों का जितना आदर और सतकार करता है उसको उतना ही लाभ पहुँचता है।

(२) जिस व्यक्ति को आदर नहीं उसको करम काँठ की खबर नहीं। जिस व्यक्ति ने किसी सन्त से आदर नहीं सीखा वह सफल नहीं।

(३) आदर सेवा करने से बढ़कर है और बहुत अमल की तुलना में आदर का स्थान महान है। जिसको आदर नहीं उसका धरम नहीं। आदर सबका करो परन्तु बुरा किसी व्यक्ति को मत कहो।

(४) मनुष्य भक्ति से बैकुन्ठ में पहुँच जाता है और आदर से ईश्वर के साथ जा मिलता है।

(५) जो व्यक्ति शिष्टाचार से वंचित रहा वह सम्पूर्ण

चमत्कारों से वंचित रहेगा।

(६) वास्तविक सुन्दरता आंत्रिक सुन्दरता का रूप है। जिस व्यक्ति का मन झुकता है उसका शरीर भी झुकता है।

(७) सन्तों की सेवा तन मन धन से करनी चाहिये और उनके किसी काम पर एतराज नहीं करना चाहिये। जो व्यक्ति सन्तों को बुरा कहता है और उन्हें दुख देता है वह कभी शांत नहीं रह सकता और न ही उसके घर में शान्ति रह सकती है। क्योंकि ईश्वर ऐसे लोगों से नाराज रहता है जो उसके भक्तों की अवहेलना करते हैं और उन्हें दुख देते हैं। परन्तु सन्त किसी का बुरा नहीं मानते बल्कि वह तो सब लोगों का भला चाहते हैं। और नई शुभ कामनाएं रखते हैं।

(८) वह व्यक्ति भाग्यशाली है जिसको सन्तों की संगत और सेवा का मौका मिले।

(९) संतों के मार्ग में जिस व्यक्ति को जो कुछ भी मिला है वह.....नम्रता, प्रेम सेवा और निष्काम कर्म योग ही से मिला है।

(१०) जो व्यक्ति ईश्वर को चाहता है वह सन्तों की निष्काम सेवा करता है और तुरन्त उनकी आज्ञा का पालन करता है।

(११) जो व्यक्ति सन्तों के सच्चे भक्त होते हैं वह प्रेम और नम्रता के साथ सन्तों की सेवा करते हैं। किन्तु सेवा के आधार पर कभी उनसे कोई प्रश्न नहीं करते और न कोई शर्त लगाते हैं। वह तो केवल उनकी दुआएँ और आशीर्वाद ही लेते हैं।

(१२) सूफी सन्त हजूर बाबा शेख फरीद ने कहा कि मैंने एक संत से सुना है कि एक दिन संत को सेवा करना हजार वर्ष की पूजा पाठ और भजन सुमिरन से बढ़कर है।

(१३) आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले को सन्तों की निष्काम व सेवा करनी चाहिये और उनके तथा अपने विश्वास में कमी

नहीं करनी चाहिये ताकि उसे सांसारिक और आत्मिक लाभ पहुँचता रहे और उसका सन्तों से जो सम्बन्ध है वह जुड़ा रहे।

(१४) लोगों पर सबसे पहले दो कर्तव्य लागू होते हैं। इसमें पहले सन्त की तलाश दूसरे उसकी आज्ञा का पालन, ताकि उनका ईश्वर से सम्बन्ध रह सके।

(१५) ईश्वर के भक्त सन्तों के सच्चे भक्त और प्रेमी होते हैं जो अपने कल्याण के लिये उनकी संगत करते हैं और उनके सम्पर्क में रहते हैं।

(१६) लोगों को चाहिये कि ऐसे संत से नाम लें और उनके चेले बनें जिनकी उनके मन में इज्जत हो और मजबूरन किसी के कहने सुनने से चेला न बने कि इस प्रकार जबरदस्ती किसी को गुरू बनाने और ज्ञान लेने से कोई लाभ नहीं।

(१७) जो व्यक्ति केवल गुरू हो और सन्त न हो वह वास्तव में गुरु नहीं होता। किन्तु जो गुरू हो और सन्त भी हो वह पूर्ण गुरू होता है।

(१८) भक्त सन्त से ऐसा सवाल न करे जो जवाब तलब हो मगर जो मन में आये कह दे! अगर सन्त जवाब दें तो अच्छा है वरना जवाब तलब न करे कि यह बे अदबी है।

(१९) भक्त के मन में जो बात आवे सन्त से कह दे और उसको छुपाये न रखे वरना इसकी तकलीफ भक्त को पहुँचेगी क्योंकि अगर बीमार अपनी बीमारी डाक्टर से न कहेगा तो वह उसका क्या इलाज करेगा।

(२०) भक्त पर जरूरी है जो कुछ लाभ उसे कहीं से पहुंचे तो उसको भी उसी का दिया हुआ जाने जिसका वह भक्त है। इसलिये उनको धन्यवाद करने के साथ साथ उस सन्त का भी धन्यवाद करना चाहिये जिससे उसे लाभ पहुँचा है।

(२१) भक्त जब सन्त के दर्शन करे तो उन्हें ईश्वर का रूप जाने और जिस जगह वह हों उसे तीर्थ स्थान समझे और जितनी ज्यादा हो सके उनकी संगत करे क्योंकि सन्तों की एक मिनट की संगत सौ वर्ष की पूजा पाठ से बढ़कर है।

(२२) भक्त जब संत के सामने जाय तो वहाँ नम्रता और प्रेम के साथ जाय और संत के सामने अदब के साथ बैठे। और अपनी नजर नीची रखे और संत की तरफ पीठ या पैर फैलाकर न बैठे और वहाँ बैठकर व्यर्थ बातें न करे। और संत को उतना ही उत्तर दे जितना वह प्रश्न करे। और संत के आध्यात्मिक भेद को छुपाये रखे और उन से बगैर पूछे ना बताये।

(२३) अगर भक्त से किसी समय कोई पाप हो जाय तो वह संत से ना छुपाये और उसे बता दे फिर वह जो आज्ञा दे उसको मान ले। क्योंकि जो मनुष्य सच्चा हो और पाप को ईश्वर के लिये तर्क करे तो ईश्वर पाप को उस व्यक्ति के मन से दूर कर देता है किन्तु भक्त का ध्यान ईश्वर की तरफ सही इरादे से हो और वह संत का सच्चा भक्त हो।

(२४) संत ईश्वर का रास्ता बताने वाले और उससे मिलाने वाले हैं। जिस जगह तुम सौ वर्ष की तप तपस्या से नहीं पहुँच सकते संत तुमको एक मिनिट में वहाँ पहुँचा सकते हैं क्योंकि वह रास्ते की दूरी और नजदीकी उसके उतार चढ़ाव से जानकारी रखते हैं। इसलिये वह तुमको जा हुक्म दें उसको मानो और तुरन्त उनकी आज्ञा का पालन करो।

(२५) संत को समझना बहुत बड़ा काम है। कम से कम इतना विश्वास जरूर रखना चाहिये कि संत जो कुछ करते हैं ईश्वर के हुक्म से करते हैं।

(२६) अगर भक्त सच्चे मन से संत को चाहता है तो संत खुद ब खुद अपने भक्त पर कृपा करेंगे। और उसे अपनी प्रार्थना में

याद रक्खेंगे। इसलिये इनसे बार बार प्रार्थना के लिये कहना उचित नहीं है।

(२७) अगर संत कोई बात बतायें तो पंडितों और विद्वानों से उसकी खोज न करे क्योंकि इस आँत्रिक और आत्मिक ज्ञान को संतों के सिवा कोई नहीं जानता।

(२८) संत के भेद को किसी से नहीं कहना चाहिये और न संत से कोई छुपी हुई बात और भेद जानने की कोशिश करनी चाहिये।

(२९) भक्त का संत के तभीं ऐसा पक्का विश्वास होना चाहिये कि किसी चमत्कार के देखने की आवश्यकता बाकी ना रहे और अपने मन को संत के हवाले कर दे। मनुष्य जिसका भक्त हो उससे कभी विश्वासघात न करे।

(३०) मनुष्य को किसी संत के चमत्कार से प्रभावित नहीं होना चाहिये क्योंकि चमत्कार एक मामूली और बेकार चीज है। और संतों के नियम के खिलाफ है।

(३१) मनुष्य को जादू टोना, टोटका, ताबीज, जन्त्र मंत्र और झाड़ फूँक करने वालों से बचना चाहिये क्योंकि अक्सर लोग जो वास्तव में इस विषय में कुछ नहीं जानते सीधे साधे व्यक्तियों को और खास तौर से स्त्रियों को बेबकूफ बनाते हैं। और उन्हें गलत बातें बताते हैं।

किन्तु वह संत जो इस विद्या की जानकारी रखते हैं केवल वही सही बात बता सकते हैं। और इससे पीड़ित लोगों की समस्याऐं पूरी कर सकते हैं। मैं पहले इन सब चीजों को नहीं मानता था। परन्तु जब मैंने इस विद्या को सीखकर इसका अनुभव किया तो मैंने इन सब चीजों को सही पाया।

वह संत जिन्हें जादू मंत्रों और इस प्रकार की क्रियाओं की जानकारी हैं वह अपनी गुप्त शक्ति और अभ्यास से न जादू टोना टोटका ताबीज और जंत्र मंत्र से कभी किसी व्यक्ति को हानि नहीं

पहुँचाते। बल्कि वह तो इन चीजों के प्रभाव से पीड़ित लोगों को छुटकारा दिलाकर उनके दुख दूर करते हैं। और उन्हें कठिनाइयों से निकालते हैं।

मेरे पास इस तरह के परेशान व्यक्ति अक्सर आते रहते हैं। जो मुझे अपनी समस्याऐं बताते हैं। और मुझसे अपने दुख दूर करने के लिये कहते हैं। किन्तु आजकल इस विद्या की जानकारी रखने वाले संत बहुत कम हैं। परन्तु लोगों को संतों से इसकी इच्छा न रखनी चाहिये। क्योंकि यह सब संसारिक झगड़े हैं और संतों से और संत मत से इन चीजों का कोई सम्बन्ध नहीं है। इस लिये जहाँ तक हो सके इनसे बचना चाहिये। अगर बास्तव में किसी व्यक्ति को इस तरह की कठिनाई और शुवा ही तो अवश्य इसका प्रबन्ध करा लेना चाहिये। अगर इस में विश्वास हो।

(३२) लोगों को अपने गुरू के आदर के सिवा दूसरे गुरूआ और संतों का भी आदर, सम्मान, और सत्कार करना चाहिये। अगर कोई व्यक्ति किसी संत का आदर नहीं करता तो समझ लो कि उसे अभी आत्मिक समझ नहीं आई और ईश्वरीय ज्ञान नहीं हुआ।

(३३) संसारी तो संसारियों से लड़ते हैं और धर्म के आधार पर एक दूसरे को बुरा कहते हैं। किन्तु संत बिना पक्षपात और भेदभाव के सभी लोगों से मिलते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

(३४) संत किसी के विरोधी नहीं होते अगर कोई व्यक्ति उनकी अवहेलना करता है या उन्हें दुख देता है तो वह स्वयं ही उसे क्षमा कर देते हैं और संसारियों की तरह बदले की भावना नहीं रखते।

लोगों को चाहिये कि वह भी अपने अन्दर यही भावना पैदा करें और सब के साथ मिलजुल कर प्रेम से रहें किन्तु यह भावना संतों की संगत और उनके सतसंग से मनुष्य के अन्दर आती है।

(३५) संत संसार में रहते हुए भी खुद को लोगों से बचा कर रखते हैं। इस लिये वह हर किसी व्यक्ति के यहाँ खाते और ठहरते हैं। क्योंकि हर व्यक्ति इसके योग्य नहीं होता। परन्तु वह इन सब के लिये प्रार्थना जरूर करते हैं।

(३६) संत अगर किसी व्यक्ति से अपनी कोई इच्छा प्रकट करें तो उसको तुरन्त पूरा करना चाहिये क्योंकि उस समय ईश्वर इस व्यक्ति पर दया करते हैं। और इस से प्रसन्न होते हैं।

(३७) जब आप किसी संत के दर्शन करने के लिये जाँय और उन से मिलें तो खालो हाथ ना जाँय यदि आप इस योग्य हैं तो जरूर कुछ खानपान की चीजें जरूर लेकर जायें और हो सके तो उन्हें दक्षिणा भी भेंट करें क्योंकि संतों को सम्मान और सत्कार है। और यही उनसे मिलने का तरीका है।

(३८) मैंने यह जो कुछ लिखा है संतों के विषय में लिखा है जो वास्तव में सत हैं किन्तु उन पाखंडी लोगों को जिन्हें बहुत व्यक्ति संत कह देते हैं। वह संत नहीं हैं हम उन्हें संत नहीं कहते कृपया आप इसका अवश्य ध्यान रखें।

(३९) अगर आप ईश्वर को मानते हैं और उसमें विश्वास रखते हैं तो सन्तों की शाखा में आकर आप अपना लोक परलोक सफल बनायें और मोक्ष प्राप्त करें। यही सन्तों का मार्ग है।

—०—

राधास्वामी

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

लेखक—कुबेरनाथ श्रीवास्तव

कबिरा खड़ा बजार में, माँगे सब की खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर॥

दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज राधास्वामी धाम वाराणसी में अपने पूज्य गुरू हजूरराय सालिगराम साहब आगरा के आदेशानुसार संसार से विरक्त होकर बडे परिश्रम से राधास्वामी मत या संतमत का प्रचार अपने जीवन काल में भारत देश के कोने-कोने में जो अब भारत, पाकिस्तान, बंगला देश तथा बर्मा में विभाजित हो गया है तथा अन्य देशों में अपनो सारी आय व्यतीत करके सफलता प्राप्त की। जब इस आसार संसार से चलने का समय आया तो उनको अनुभव हुआ कि जनता ज्यों की त्यों सन्त मत को समझने की अधिकारी नहीं हैं। अतः उन्होंने अपने सर्व श्रेष्ठ शिष्य परम दयाल प० फकीरचन्द्र जी महाराज को आदेश दिया कि "फकीर भविष्य में दुनिया विज्ञानी हो जावेगी। प्रत्येक बात जब तक विज्ञान द्वारा सिद्ध नहीं होगी कोई मानने को तैयार नहीं होगा! पंथ ये सम्प्रदाय लोप हो जायेंगे इन पर कोई विश्वास नहीं करेगा। तुम अपने जीवन काल में सन्त मत की शिक्षा की प्रथा को बदल देना नहीं तो जनता पथ भ्रष्ट हो जावेगी। ये मत समझना कि जनता ही को तुम्हारे इस कार्य से लाभ होगा बल्कि प्रकृति ने जिस अभिप्राय से तुम्हारा हमारे साथ सम्बन्ध जोड़ा है, उसमें अभी जो त्रुटि शेष है वह समाप्त हो जावेगी और तुम पूर्ण हो जावोगे।

परम दयाल साहब बडे सोच विचार में पड़ गये कि सन्त मत की प्रथा किस प्रकार बदली जावे, इस अवस्था में उनको संत कबीर साहब के निम्नांकित वाणी की आकाश वाणी हुई।

मानव बन कर ना मुआ, मुआ तो डगर ढोर।
एको जीव ठौर न लगा, लगा तो हाथी घोर॥

इस आकाश वाणी को सुन कर परम दयाल साहब प्रसन्न हो गये और सत मत को मानव मत के रूप में प्रगट करने का निश्चय किया सन १९६६ में अपने निवास स्थान पर "मनुष्य बनो" का झन्डा फहराया, मनुष्य बनो नामक पुस्तक लिखी और मानवता का प्रचार करना आरम्भ किया। इस प्रचार के हेतु मानवता मन्दिर की स्थापना की अपने निष्काम कार्य हेतु तपोबल द्वारा मानव मन्दिर को हरा भरा बनाया जो फूलने फलने लगा। मानवता का प्रचार भारत, कनाडा, अमेरिका व अन्य देशों में कुशल हो गया।

जब कभी वे बाहर दौरे पर जाते थे तो मानवता मन्दिर में उनकी जगह पर कोई सत संग नहीं दे सकता था। इसके हेतु उन्होंने श्री मुन्शी राम भगत को कहा कि "तुम स्थाई रूप से यहाँ रहते हो तुम में सदभावना हैं तथा इस समय जो लोग स्थाई रूप से मानव मन्दिर में व्यापक है उनमें तुम सबसे अधिक योग्य हो। जब मैं दौरे पर जाता हूँ तो तुम यहाँ सतसंग कराया करो। यह बात हमारे सामने की है मगर श्री मुन्शीराम भगत को यह नहीं कहा कि तुम हमारे उत्तराधिकारी रहोगे। इसके हेतु परम दयाल साहब ने श्री ईश्वर शरण शर्मा को अपना उत्तरधिकारी बनाया और एक वसियत नामा लिखकर रस्ट्री द्वारा उसकी पुष्टि कर दी।

इसकी सूचना उन्होंने हमको एक पत्र द्वारा दिया जो मानव मन्दिर मार्च १९८१ में प्रकाशित है। इस लेख के सम्बन्ध में जो बात है वह निम्नलिखित है।

कुवेर नाथ राधास्वामी-कुवेर अलविदा-मेरे जीवन का कार्य लगभग समाप्त है, दाता दयाल ने आदेश दिया था कि शिक्षा बदल जाने वो बदल चला—आपने मेरे कर्म काटने में काफी सहायता की है सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आपको सेहत, दौलत मन की शान्ति

मेसे मरने के बाद किसी संत पर क्या गुजरती है किसी को क्या पता जो कुछ किसी को मिला या मिलता है वह उसका अपना विश्वास श्रद्धा वो कर्म है।

जो कुछ हुआ, हुआ कर्म से तेरे।
जो कुछ होगा कर्म से तेरे होगा॥

इस वैसाखी पर अपना चार्ज ईश्वर शरण शर्मा और सुन्शी राम भगत को दे दूँगा। तत पश्चात यदि जीवित रहा तो अपनी शरणागत में व्यतीत करुगा।

मुझे अभी तक पता नहीं चला कि मैंने उनके कर्म काटने में कौन सी सहायता की है। परम दयाल साहब से मेरा परिचय दाता दयाल के चोला छोडने के बाद राधास्वामी धाम पर हुआ जब कि वह वहाँ सतसंग देना चाहते थे और रामकिशोर सिंह ने जो दाता दयाल के भतीजे हैं उनको ऐसा करने की अनुमति नही दी और कहा कि यह स्थान हमारे नाम से है आप को कोई अधिकार यहाँ सत संग देने का नहीं हैं। परम दयाल साहब ने कहा कि भाई यद्यपि यह सत संगियों की सम्पति से बनी हैं और इस पर जनता का अधिकार है तद्यपि जो कुछ तुम मूल्य माँगो मैं तुम्हारी मुह माँगी मूल्य देने को तैयार हूं। मगर रामकिशोर सिंह ने इसको स्वोकार नहीं किया। परम दयाल साहब ने हमारी ओर उदासीन दृष्टि से देखा जिसका उत्तर मैंने दृष्टि द्वारा दिया कि रामकिशोर का यह कार्य अनुचित है शक्ति नहीं हैं वर्ना मैं इस पर अपना अधिकार जमा लेता। जब तक परम दयाल राधास्वामी धाम पर रहें मुझसे प्रेम पूर्वक बातें करते रहे जिस की आशा रखने का मैं अपने को अधिकारी नहीं समझता था। जब वह वहाँ से होशियार पुर चले गये, मैं उनको भूल गया। घर जाने पर दिनांक २८-३-१९४१ को उन्होंने दो ताव कागज पर आध्यात्मिक विषयों से परिपूर्ण एक लम्बा चौडा पत्र हमको लिखा जो गिरते परते हमको प्राप्त हुआ क्यों कि पता

में त्रुटि थी। हम लोगों में पत्र व्यवहार प्रचलित हो गया। ऐस प्रतीत होता था कि परम दयाल साहब को हमारी त्रुटियों को दू करने की हार्दिक अभिलाषा हो गई है।

दिनाक ८-२-५२ को एक आवश्यक पत्र परम दयाल साहब का प्राप्त हुआ। जिसमें उन्होंने अनुरोध किया कि शिव रात्री के अवसर पर अलीगढ़ हमसे मिलो। मैं उस समय इलाहाबाद से आगे पश्चिम नहीं गया था। अलीगढ़ को दूर समझ कर वहां जाना पसन्द नहीं किया। मैंने उनको लिखा कि क्या हमारा आना अति आवश्यक है। उन्होंने उत्तर दिया हाँ जरूर मिलो। क्या जाने फिर कब मिलने का अवसर प्राप्त हो। जब अलीगढ़ में दर्शन किया तो उन्होंने पूछा तुम्हारी माली हालत कैसी है। मैंने उत्तर दिया महाराज कमा खा लेता हूं कोई धनी नहीं हूँ। उन्होंने कहा अच्छा मैं समाधी में जाता हूँ। जब उठूँ तब मिलना। दो घन्टे तक समाधी में रहने के बाद उठे तो मैं मिला। हमारे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा जाओ —(१) तुमको धन की कमी न रहेगी। (२) संसार में एक मत प्रचलित होगा। (३) और संसार में एक राज स्थापित होगा।

एक बार मैं उनके साथ सेठ चन्द्रकान्ता के मकान पर ठहरा था जो वारंगल (आ० प्र०) का करोड़पती आदमी है। १२ बजे के लगभग रात्रि को परमदयाल साहब ने एक व्यक्ति से कहा कुबेर कहाँ है उसको बुला लावो। मैं दूर पर था, वह व्यक्ति ढूढ़ते ढूढ़ते हमारे पास पहुँचा और जगाकर कहा कि परमदयाल साहब बुला रहे हैं। मैं उनके पास गया तो देखा कि मस्ती की हालत में है। जब राधा-स्वामी कहा तो उन्होंने कहा कि राधास्वामी धाम के स्कूल को अपने अधिकार में करो मैं आशीर्वाद देता हूँ तुम कुशल रहोगे। मैंने सोचा मस्ती की तरंग में कह रहे हैं चुप मार गया कि भूल जावेंगे। वहाँ से हम लोग गौरी सीटी वैंकटया के यहाँ गये जो फरीमनगर का कई लाखों का व्यक्ति है तो वहां उन्होंने कहना प्रारम्भ किया कि

राधास्वामी धाम व स्कूल को अपने अधिकार में लाने हेतु मैंने कुबेरनाथ को नियुक्त किया है तुम लोग इसकी सहायता करना। करीमनगर से हम लोग भाई नन्दू सिंह के यहां निजामाबाद गये तो वहां उपरोक्त बातें कहते हुए कहने लगे इस कार्य के करने से तुम में जो कमी रह गई है वह पूरी हो जायेगी। उनके आशीर्वाद से मैंने राधास्वामी धाम व दातादयाल के हाईस्कूल पर अधिकार पा लिया। जब वह हाईस्कूल इण्टर कालेज होगया तो वहाँ के लोगों का द्वेष व ईर्ष्या हमारे प्रति सीमा पर पहुँचने का अनुभव करके परमदयाल साहब ने कहा कि तुम्हारा कार्य यहाँ समाप्त हो गया है और शरनानन्द को हमारी जगह दिया। जिसके हेतु वह बड़ी उत्सुकता से प्रयास कर रहे थे। कई बार परमदयाल साहब से कहा कि आय व व्यय का व्यौरा कुबेरनाथ से लिया जावे। परमदयाल साहब उत्तर देना टालते रहे। आखिर उन्होंने कहा कि भाई मैंने तो कुछ दिया नहीं है। अगर वह पूछ बैठे कि आपको हिसाब मांगने का क्या हक है तो मैं क्या जवाब दूँगा। यह सुनकर शरनानन्द निराश हो गये और धाम को ज्यों का त्यों कर छोड़ दिया। हमको पता नहीं चला कि हम में क्या कमी थी और क्या पूरी हुई और न कभी हमने परमदयाल साहब से पूछताछ किया क्योंकि मैंने इस दृष्टिकोण से धाम पर अधिकार प्राप्त नहीं किया था। हाँ इतना अनुभव हो गया कि संसार में ९५ प्रतिशत ऐसे व्यक्ति हैं जिनको भलाई के हेतु अगर कोई जान भी दे देवे तो बजाय कृतज्ञ होने के कृतघ्न ही होंगे और द्वेष और ईर्ष्या तो उनकी प्रकृति है। परमसन्त कबीर साहब इस प्रकार कहते हैं।

कामी तरे, क्रोधी तरे, पापी तरे अनन्त।
आन उपासक कृतघ्न जन, तरे न नाम रटन्त।।

सन्त पलटू साहब इस प्रकार कहते हैं —

पर दुख कारन दुख सहै, सन्त वो असन्त है एक।

सन्त तुलसी साहब ने ऐसे दुष्ट व्यक्तियों का वर्णन खल गण की वन्दना में भली भांति बालकाण्ड में किया है। जिसकी एक चौपाई निम्नलिखित है —

पर कारज लगी तन परी हरही।
जीम हीमी उपल कृषि बलि गरही॥

एक बार परमदयाल साहब राधास्वामी धाम में भण्डारे के अवसर पर सेठ दुर्गादास, सेठ गौरी बैंकटया, व सेठ गिरधारीलाल के साथ पधारे। उनको आदेश दिया कि देखो धाम में अ॰ तक जो काम हुआ है उसमें कितना व्यय हुआ होगा। उन्होंने जाँच परताल करके कहा अब तक १५–२० हजार रुपया व्यय हुआ होगा। परम दयाल साहब ने कहा वह इन लोगों ने कहा कि आज्ञा हो तो यह रुपया कुबेरनाथ को दे दिया जावे। परमदयाल साहब ने हमको बुलाया और कहा कि भई ये लोग कह रहे हैं कि अब तक १५-२० हजार रुपया खर्च हुआ होगा अतः १५ हजार रुपया ये लोग तुमको दे देंगे। मैंने प्रार्थना किया कि महाराज हमारे पास रुपया कहां था कि खर्च करते जो कुछ खर्च हुआ है आपका हुआ है। उन्होंने कहा जाने दो जी यह नहीं लेगा।

हमने उपरोक्त बातें इस कारण लिखा है कि सन्त की बातें सन्त ही जानते हैं। इसके पढ़ने वालों में से अगर कोई सन्त हो तो इस रहस्य को बता दे।

दातादयाल के चोला छोड़ने के बाद परमदयाल साहब ने बड़े भाई के नाते हमारी देखभाल करना अपना धर्म समझा। हमारे दुनिया व दीन की परिस्थिति सुधार कर हमको एक ऐसी आस्था में ले गये हैं जिसका स्वप्न भी मैं नहीं देख सकता था। जैसे कोई इन्जीनियर किसी मकान का नक्शा बनाकर उसको बनाना आरम्भ कर देता है। किसी सीमा तक मकान बनाने के बाद उसका नक्शा किसी को बिना बताये हुए मर जाता है। कोई समझ नहीं पाता है

कि आगे मकान किस प्रकार बनाया जाये। एक योग्य इन्जीनियर बने हुए भाग को देखकर मृतक इन्जीनियर के नक्शों के मुताबिक हू बहू वैसा ही मकान को बना देता है। यही कार्य परमदयाल साहब ने दातादयाल के बाद किया। कई ऐसी बातें हैं जिसको दातादयाल ने हमको कहा था वह उनके सामने पूरी नहीं हुई थीं। मगर परमदयाल साहब ने उसको पूरा कर दिया।

परम दयाल साहब की सहानुभूति हमारे साथ सदैव रही। उनकी सहानुभूति मानवता मन्दिर से थी। अतः प्राकृतिक रूप से हमारी सहानुभूति मानवता मन्दिर से होना अनिवार्य है। मैं यही चाहता हूँ कि मानवता मन्दिर कुशल रहे और परमदयाल साहब के मानव मत का प्रचार संसार में फैलाकर संसार में प्रसन्नता, आनन्द व शान्ति लाये। मानव दयाल से हमारा कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं है। मानवता मन्दिर की परिस्थिति से हमको प्रतीत होता है कि जिस प्रकार हमारी आलोचना राधास्वामी धाम में हुई वही बात यहाँ भी प्रगट हो रही है। अगर मानव दयाल में मान प्रतिष्ठा के अँकुर नहीं हैं तो वह जनता की आलोचना के प्रभाव से ब जायेंगे। रहा मानवता के प्रचार का प्रश्न। राम ने तप किया तब शिव की धनुष को तोड़ा, चौदह वर्ष बनवास किया तब रावण पर विजय की शक्ति प्राप्त की। पाण्डवों ने अज्ञात वास किया तो कौरवों पर विजय पाया। कृष्ण ने ग्वाल वाल के रूप में तप किया तब जाकर कंस को मारा। पारवती ने शिव से विवाह के हेतु तप किया इत्यादि। इससे सिद्ध होता है कि किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने हेतु तपो बल का होना अनिवार्य है। जो राजा रंक के भेष में रहता है। वह रंक से लेकर राजा तक की सहायता कर सकता है। जो राजा राजा के भेष में रहता है वह केवल राजा ही की सहायता कर सकता है रंक की सहायता नहीं कर सकता। और अगर कहीं रंक ने राजा का भेष धारण कर लिया तो नष्ट भ्रष्ट

हो जावेगा।

किसी का क्या हक है कि परमदयाल के बसीयत में आक्षेप करे। उसने मानवता मन्दिर को क्या दिया है। काजो जो क्यों दुबले पतले शहर के अन्देश से का हाल। यह संसार का स्वभाव है कि वह किसी का कुशल देखना पसन्द नहीं करती उनको पता नहीं कि उन के इस काम का प्रभाव उन पर क्या पड़ेगा। पहले तो वह स्वयं नष्ट भ्रष्ट हो जावेगा उसके बाद चाहे जो कुछ हो। मगर निष्काम कार्य करने वाले पर उनका प्रभाव उसी प्रकार छलक जाता है जैसे कमल के पत्ते पर पानी।

जीवन चरित्र पता

कबीर साहब कपड़ा बुनकर पेट पालते थे। पलटु साहब को जो कुछ कोई दे देता था उसी पर गुजारा करते थे जो बच जाता था उसको बाँट देते थे। तुलसी साहब हाथरस वाले के पास केवल एक कम्बल रहता था। दातादयाल एक तौलिया पहनते थे और एक ओढ़ते थे। और एक मुट्ठी चना भिगाकर खा लिया करते थे। परमदयाल साहब ने भट्टे पर ईंट ढोने का काम कर अपना गुजारा किया। रणजीत सिंह की फौज जब सतलज पार नहीं कर सकी तो उसने स्वयं अपना घोड़ा सतलज में तैराया और पार हो गया। अकबर बादशाह को जब मालूम हुआ कि गुजरात में विद्रोह हो गया है तो अकेले साड़नी पर सवार होकर पहुँच गया। दातादे ने बलिया में जब हमको दूसरे की भूमि पर मकान बनाने का आदेश दिया तो कहा कि विद्रोह तो होगा मगर जिस कार्य का विद्रोह न हो उसमें दृढ़ता नहीं आती। ऐसी हालत हुई कि खाने की कौन कहे सोने के लिए भी जगह नहीं मिलती थी। दातादयाल जब लाहौर में आर्य गजट के सम्पादक थे उनकी पुस्तक फूँक दी गई इत्यादि। सभी सफल हुये थे सब तप बल ही तो था। जिनमें तपो बल नहीं था वह शाहजहाँ बादशाह था। जिसको औरंगजेब ने कैद कर लिया।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

पूरा गुरु

प्रवचन परमदयाल परमसन्त पं० फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

दिनाँक ८-७-७९

देखा ! देखा ! देखा !

अगम अगोचर रूप गुरू का, गुरु की दया से देखा।
नहीं अनेक और एक नहीं है, नहीं वह ज्ञान विवेक नहीं है।
पक्ष नहीं और टेक नहीं है, सबका हो गया लेखा।
सत असत से न्यारा पाया, ज्ञान ध्यान से रहा अलगाया।
वह अकाम वह अगम अमाया, अद्‌भुत रूप परेखा।
नहीं वह ज्ञान विषय तुरियातित, नहीं वह गत नहीं वह अवगत।
भूल भरम में पड़े जग के मत, भूले ज्ञानी भेषा।
नहीं सुख रूप न होत दुखारी, नहीं अनहित और नहीं हितकारी।
राधास्वामी चरण शरन बलहारी, अगम अगाध अलेखा।

मुझे याद है दातादयाल ने एक बार पत्र में लिखा था। फकीर

चन्द सतसंग कराना उपाधो है। कोई शक नहीं कि हजूर महाराज ने यह काम दिया था। मगर मेरी भी इच्छा थी कि मैं यह काम करूँ। वही बात आज मुझे सच्ची सिद्ध हुई है।

प्रकृति मुझे इस सन्त मत में ले आई। इसमें गुरुमत का मरम था अर्थात गुरु की पूजा करो मैंने गुरु की पूजा बहुत की और लोगों ने भी की होगी उनको क्या मिला। मुझे नहीं पता, कोई महात्मा अपने दिल की बात नहीं बताता। दाता दयाल ने शब्दों में बहुत कुछ कहा। मगर इन शब्दों से दुनिया को क्या पता लगता है। कोई क्या समझे? जो दातादयाल के इस ऊपर के शब्द को पढ़ेगा वह क्या समझेगा। यही कहेगा कि लिखने वाला कोई दीवाना है। इन ही बाणियों ने मुझे पागल किया हुआ था। मैं प्रत्येक बात की गहराई तक पहुँचना चाहता हूँ। कि सच्ची बात क्या है।

देखा देखा देखा

अगम अगोचर रूप गुरू का, गुरु की दया से देखा।

इससे पहली बात तो सिद्ध होती है कि तुम सारा जीवन गुरु को ही पूजते रहते हो सारा जीवन और मरते समय भी कहते हैं कि गुरु लेने के लिए आया। बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि तुमको असली गुरु का रूप बता दे। बाहर के गुरु की दया से गुरु के रूप को मैंने पहचाना। वह क्या है? वह आखिरी ज्ञान है जिसकी गहराई नहीं मिलती। अगोचर के शब्द का अर्थ क्या है, मुझे पता नहीं मैं कहना चाहता हूँ। कि हम लोग जी गुरुओं के पीछे फिरते हैं। और बाहर के गुरु को ही सब कुछ समझते हैं। वह मूर्ख हैं। और कभी आखिरी सीढ़ी पर नहीं पहुँच सकते। यह मेरी समझ में आया है।

दातादयाल ने बहुत मुझे समझाया मगर इन शब्दों को कौन समझेगा? मुझे बताओ तो सही। मुझको यह समझ तुम लोगों से आई। मैंने गुरु का रूप तुम्हारी दया से देखा। इसलिए तुम मेरे

गुरु हो। मैंने कैसे देखा ? जब से मुझे यह पता लगा, कि मेरा रूप प्रगट होकर किसी के काम कर जाता है। और मैं कहीं नहीं जाता इससे मुझ का विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रूप दाता। दयाल का, राम का, कृष्ण का आता था, या बातें होती थी। वास्तव में वह गुरु नहीं था। वो नहीं आते थे। अपना ही मन था। जिस प्रकार का संस्कार था वह प्रगट होता था। मैं इसलिए यह बताना चाहता हूं, ताकि संसार गलत गुरुवाद में फँसकर लुट न जावे। तुम देखते हो करोड़ों अरबों रुपये इन गुरुओं ने अपने डेरों में लगवाए। आनन्दपुर देख लो, चिन्तपूरनी देख लो और स्थानों पर गुरुओं के डेरे देख लो। क्या किया इन्होंने ? बताओ गुरु या मालिक का रूप नहीं बताया। मेरे पास जितने लोग आते हैं। दुनिया की इच्छा लेकर आते हैं। किसी गुरु ने, किसी महात्मा ने, तुमको कुछ नहीं देना। जो जो कर्म तुमने किए हुए हैं, उनका फल तुमको मिलेगा। गुरु ने तुम्हारे ख्याल को बदलना है। तुम अपने ख्याल को बदल लो तुम्हारा जीवन बदल जायेगा। मैंने गुरु का रूप तुम्हारी दया से देखा। गुरु की दया है। मगर तुम मेरे गुरु हो। जब मैं लाचार हो गया इस बात को मानने के लिए विवश हुआ कि मेरे अन्तर जितने रंग रूप बनते हैं, ये सच्चाई नहीं रखते। तो मैं मन को छोड़ जाता हूं। मन से आगे है प्रकाश और शब्द, प्रकाश गुरु नहीं है। प्रकाश गुरु के चरण हैं। राधास्वामी मत के अनुसार शब्द गुरु है प्रकाश और शब्द में रहता हूँ और उस वस्तु को ढूढ़ता हूँ जो वस्तु प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह जो बस्तु है वह है गुरु का रूप या तुम्हारा अपना रूप। यह मेरा अपना अनुभव है। जब कभी उस गुरु के रूप में जाता हूँ तो मैं ही नहीं रहता इसी प्रकार एक खोल में दो तलवारें नहीं रहा करतीं। दो कैसे रहेंगी ? इसलिये हम तुम जितने हैं सब अकाल पुरुष के अंश हैं। जब गुरु की दया से ये विश्वास हो जाता है तो फिर हम कुत्ते बनकर

हड्डियों को नहीं चाहते। कुत्ता सूखी हड्डी को लेकर चबाता है। उसके चबाने से उसके मुँह से खून निकलता है। वह स्वाद तो उसे अपने खून का आता है। मगर वह समझता है, हड्डी में से खून निकलता है। जो कुछ है तुम्हारे अपने अन्तर है। बाहर नहीं। मगर अन्तर में जा कौन सकता है? जिसको दुनिया की आस है, वह नहीं जा सकता। तुम लोग जो दूर दूर दूर से आए हो उनके दिलों से पूछो क्या तुम गुरु का रूप देखने के लिए आये हो? तुम तो दुनिया की इच्छाओं को लेकर आए हो। ये सन्त मत या गुरुमत उनके लिए नहीं है। यह गुरुमत तो केवल उनके लिए है, जिनको यह विश्वास हो गया है, कि मन के चक्कर में सुख नहीं है। हम थोड़े दिनों के लिए यहाँ पर आए हैं। यहाँ हमारा कोई नहीं है कहाँ से आए हैं और कहां जाना है। सब छोड़कर चले जायेंगे जब तक किसी को यह तड़प नहीं है उसको नाम दान देगा और गुरु मत में शामिल करना एक महा पाप है। ये जितने गुरु बनकर नाम दान देते हैं। यह सब गलती खाते हैं स्वामी जी जिन्होंने यह पंथ चलाया वह कह गए नाम का अधिकारी कौन है।

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आशा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जाके॥

अब तुम बताओ तुम में से कितने आदमी हैं। जो इन वस्तुओं से बरी है। फिर अगर आप ये चाहे कि आपको मुक्ति या शान्ति मिल जाये। या गुरु के रूप का या अपने घर का पता लग जाये। यह पता कौन देगा?

गुरुओं ने अपने डेरे बनाने और अपना नाम चमकाने के लिये जो भी आया नाम दे दिया। चाहे उसके कान में फूँ फूँ ही करदें अज्ञानी जीवों को जब तक वह काफी सतसंग न कर लें उनको test न किया जावे उनको नामदान देना महा पाप है। क्योंकि यह नाम बजाए लाभ के उनको खा जायेगा फिर तुम उन तसवीरों में फँसोगे

जो तुम्हारे अन्दर प्रगट होती हैं और तुम मारे जाओगे जिसके अन्तर आज फकीरचन्द प्रगट हो गया। उसने समझा बाबा फकीर बड़ी करनी वाला है। आया दो सौ चार सौ रुपये फकीरचन्द को चढ़ा गया। बताओ वह लुट गया के नहीं लुट गया। ऐसे ही जिसके लड़का हुआ और उसने ७५०००) रुपये की धनराशि यहाँ भेजी वह भी लुट गया। वह उसकी बेसमझी ही थी और क्या था। क्या मैंने उसको लड़का दिया? नहीं वह तो उसके कर्म में था गृहस्थियों और दुनियादारों के लिए है केवल वेद मार्ग 'शिव संकल्प अस्तु' केवल अपने विचार को ठीक रखो विचार में बड़ी ताकत है। अब ये बैठी है, रात को मेरे घर गई। घर के सारे झगड़े सुना दिये, जो तुम्हारे कर्म में लिखा है। उसका मैं कैसे बदलूँ? मेरा बाप भी नहीं बदल सकता। इन गुरुओं और महात्माओं की अपनी जीवनी देखो। पुत्र नालायक हो गए बीमारियां इनको आई, इनकी अपनी जनानी से नहीं बनी, झगड़ा रहा जब ये अपना भी दुख दूर न कर सके तो हमारे दुख कैसे दूर करेंगे। तुम भूल में हो। मैं हूं समय का सन्त सतगुरु। सतगुरु कहते हैं सच्चे ज्ञान को इस समय में जिस सच्चे ज्ञान से मनुष्य को शान्ति मिल सकती है वह मैं बताता हूँ —

कर्म जो जो करेगा अन्त में भोगना पड़ेगा।

देखा—देखा – देखा

अगम अगोचर नाम गुरु का, गुरु की दया से देखा।
नहीं अनेक और एक नहीं है, नहीं वह ज्ञान विवेक नहीं है।

– वह गुरु कौन है? वह है अकह अपार अनामी मगर मैं इस पर भी सन्तों के साथ सहमत नहीं हूँ। वह मालिक क्या है? हम अगर अकह अपार, अनामी कहते हैं तो इसलिये कहते हैं कि जब यात्रा करते हुए ऊपर अन्तर जाते हैं तो हमें अपनी ही होश नहीं रहती हमारी मन और बुद्धि सब छूट जाती है वह बुद्धि का विषय नहीं है। फिर जब होश में आते हैं तो कह देते हैं कि मालिक को ढूँढ़ने

निकले थे। मालिक क्या निकला ? अकह, अपार, अनामी मगर वास्तव में क्या है। न कबीर साहब को पता लगा न स्वामी जी को न दातादयाल को सच्ची जानकारी का पता लगा। उस प्रकृति के खेल का मुझे भी पूरा पता नहीं लगा। प्रकृति ही जानती है। कोई भी नहीं जान सकता। मैं तो नहीं कह सकता वह क्या है। क्या नहीं। मगर जहाँ तक हमारी खोज का प्रश्न है। वहाँ तक हम ठीक कहते हैं। वह क्या है ? समझ से जाना तो यही कहूँगा कि वह अपार है अनाम है। उसका रूप रंग कोई नहीं क्योंकि जब मैं उसको ढूढ़ने के लिए जाता हूँ तो समाप्त हो जाता हूँ। इसलिए इस आयु में मैं अब शरणागत हो जाता हूँ। दातादयाल जी का शरणागत नहीं हुआ उस जात का शरणागत हूँ, जो सब दुनिया का मालिक है।

नहीं अनेक और एक नहीं है।
नहीं वह ज्ञान विवेक नहीं है॥

अब जो कुछ मैंने कहा ठीक कहा। जब मैं वहाँ चला जाता हूँ कभी महीने दो महीने के पश्चात कभी तीन महीने के पश्चात, प्रतिदिन तो जाया नहीं जाता सच्ची बात आपको बोलता हूँ। तो वहाँ क्या है ? हम न उसको एक कह सकते हैं न उसको दो कह सकते हैं। न उसको विवेक कह सकते हैं, न उसको समझ कह सकते हैं। क्यों ? क्योंकि हम ही गुम हो जाते हैं तो एक कौन कहेगा दो कौन कहेगा विवेक कौन सोचेगा ? मैं कई बार सोचा करता था और अब भी सोचता हूँ कि सन्तों ने इस मसले को जनता में क्यों पेश किया ? केवल इसलिये कि हमारा जात पात का पक्षपात दूर हो जाये। हम जो जात पात के बारे में या गुरु के बारे में झगड़ा करते हैं कि मजहब क्या है। गुरु क्या है। एक डेरे वाले दूसरे डेरे वाले से नहीं मिलते। अब सिक्ख अलग कौम बना रहे हैं। इस अलगपने तो हमारा सत्यानाश कर दिया। सिर फटते हैं। हमारा

यह अज्ञान दूर हो जाये नहीं तो रूहानयत के हिसाब से तो किसी को आवश्यकता नहीं, वह तो कोई कोई मनुष्य होता है।

पक्ष नह. और टेक नहीं सबका हो गया लेखा।

मैं सोचता हूँ ठीक है हां जब कभी मैं वहां पहुँच जाता हूँ मेरे लिये दुनिया सारी समाप्त हो जाती है। समझ, मन, बुद्धि, चित, अहंकार सब मेरे लिये समाप्त हो जाता है और अपनी होश नहीं रहतो। यह निचोड़ निकला राम के मिलने का।

सत असत से न्यारा पाया, ज्ञान ध्यान से रहा अलगाया।

वह अकाम अगम अमाया, अद्भुत रूप परेखा॥

ये है गुरु का रूप, वहाँ काम नहीं अकाम माया नहीं वहाँ जब पहुंच जाओगे ज्ञानी नहीं, ध्यानी नहीं, सत्य नहीं, असत्य नहीं वह क्या अवस्था है? वह तुम्हारी वह अवस्था है। जहां तुम अपने अन्तर चढ़कर अपने आपको गुम कर जाते हो। और उसी जात में मिल जाते हो। तुम आप नहीं रहते, तुमको अपना पता नहीं रहता, वह है गुरु का रूप अब अगर मैं कह दूँ कि तुम्हार जात आप गुरु का रूप है। तो क्या मैं गलत हूं मगर माया का चक्कर इतना भारी है कि आपको इसकी आवश्यकता नहीं मेरे पास तो जितने आदमी आते हैं। सब दुनिया के दुखों को लेकर आते हैं।

नहिं वह ज्ञान विषय तुरयातीत नहिं वह गत और नहीं वह अवगत

वह न गति में रहता है। न बेगति में रहता है। वह क्या है कौन समझेगा उसको? केवल वह ही समझेगा जो इस बात की खोज में रहता है मेरा आद क्या मैंने कहाँ जाना है? जिसको संसार से वैराग्य हो गया है। उसको अगर कोई सतसंग मिल जावे और अभ्यास करे उसको पता लगता है कि गुरु क्या है। शेष नहीं समझ नहीं सकते। इस बात को समझने के लिए मैं तो राम से मिलने गया था और प्रकृति ऐसी जगह ले गई, जहाँ से यह सन्तमत मुझे मिल गया। मैं कबीर साहब और महाराज स्वामी जी की बाणियाँ पढ़ी।

तो दिल में दुख हुआ करता था। प्रार्थना किया करता था कि मैं कहाँ फँस गया दाता मैं तो तेरे मिलने के लिए निकला था आदेश था गुरु की सेवा करो। गुरु तुमको सब कुछ देगा। मैंने जितनी हो सकी गुरु की सेवा को। मगर वह वस्तु न मिली। उन्होंने उस वस्तु को दिलाने के लिए मुझे यह काम दिया था। मैं न गुरु हूँ न महात्मा हूँ। अब मैं समझता हूँ कि जो कुछ उन्होंने कहा ठीक कहा। वहाँ तो ज्ञान ध्यान सत्य असत्य कुछ भी नहीं। और कैसे नहीं है। वह मैंने बता दिया। तुम्हारी दया से मुझे समझ मिली पता लग गया। मगर ठहरा नहीं जाता। पता नहीं मेरा क्या नतीजा होगा।

भूल भरम में पड़े जग के मत भूले ज्ञानी भेसा।

वह कहते हैं, जगत के जितने धर्म और पन्थ हैं। सब भूल में फँसे हुए हैं। ज्ञानी भी भूले और ध्यानी भूल गए कैसे? तुम मेरा ध्यान करते हो। मरते समय मेरा रूप भी तुम्हारे सामने चला जाता है। मैं तो होता नहीं, भूले हुए नहीं हो तो तुम कौन हो?

मेरी आँखों में से खून निकलता है। जब मैं देखता हूँ। इन गुरुओं ने हमें अज्ञानी समझ कर लूटा है। दिल जलता है। कितना अनर्थ किया गया। लोगों को झूठी बातें बताकर अपने और अपनी गद्दियों के पीछे लगाया गया। और मानव जाति बँट गई। मैं अवतार हूँ इस वास्ते दुनिया में आया हूँ। कि वह जो अन्धेर गर्दी इन धर्म वालों ने मचाई है ये साफ कर जाऊँ। मैं राधास्वामी मत का हूँ। मगर मेरे में टेक नहीं है। जो सचाई मुझे मिली वह मैं बता देता हूँ।

नहीं सुख रूप न होत दुखारी नहीं, अनन्त और नहीं हितकारी।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, अगम अगाध अलेखा॥

अब कौन समझेगा जो पढ़ेगा वह कहेगा किसी पागल से लिखा हुआ है और यह ठीक है। जब मेरी सुरत प्रकाश और शब्द को छोड़कर ऊपर जाती है। वहाँ हित किसका और अनहित किसका

क्या है वह ? अगम है और अगाध है। अन्त नहीं मिलता अप
आप ही मनुष्य गुम हो जाता है। यह मेरा अनुभव है। किसी व
क्या मिला मुझे पता नहीं। जो कुछ मेरे साथ बीती, उस समय मै
प्रण किया था, अपना अनुभव कह जाऊँगा। वो मैंने कह दिया।
परसों शाम मैं रेडियो सुन रहा था। रेडियो पर ग्रन्थ साहब का
पाठ होता है। उसमें अन्त में एक शब्द पढ़ा गया, जिसका अर्थ यह
है कि मेरा सतगुरु सच्चा न जावे न आवे न मरे न जीवे। हर
मनुष्य के साथ रहता है। मैं हैरान होता हूँ कि सिख भाई क्या
समझते हैं। बाणी तो कहती है सतगुरु तुम्हारा साथ रहता है। न
वह आता है न जाता है। मगर यहां कोई फकीरचन्द को गुरु मानता
है। कोई ग्रन्थ साहिब को गुरु मानता है। असल बात और सच्चाई
को समझने की कौन कोशिश करता है। कोई नहीं करता। यही
बात स्वामी जी ने जेठ महीने में लिखा है कि मनुष्य आगे जाकर
कहाँ पहुँचता है।

जहाँ न संतनाम न नाम न अनामी।

तो मैंने जो कुछ समझा है। वह स्वामी जी की बाणी जुम्मेवारी
लेती है। इसलिए मैं अपने आपको गलत नहीं समझता। जब
आदमी सफर के आखिरी भाग में पहुँच जाता है। तो वह क्या
अवस्था है ? अपना आपा जात में गुम कर जाता है। अपनी होश
नहीं रहती। जीवन समाप्त होकर केवल हस्ती रह जानी है। शेष
रह गया तुम लोग आये हो। मनुष्य का सबसे पहला धर्म पेट की
रोटी कमाने का है। राम राम पीछे अपनी कमाई पहले। प्रत्येक
मनुष्य की ड्यूटी है। जब तक हाथ पैर चलते अपनी कमाई करे।
कमाई करके खाने से पहले अपने बच्चों को खिलावे, गुरु पीछे से।
जिनको प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगाया है। पहले तुमको दुनिया
चाहिए। याद रखना यह कलयुग है। जो देता है वह लेता है।
जिसने पहले जन्म में दिया हुआ है उसे मिलता है। अब

दोगे मिलेगा। न दोगे न मिलेगा।

सबको राधास्वामी।

—×—

जीवन मुक्तावस्था या सहज अवस्था

लेखक—दुर्गादास 'चमन'

जीवन मुक्तावस्था का प्राप्त करना कठिन भी है और नहीं भी कठिन इसलिये है कि यदि कोई भी मनुष्य किसी भी योग को अपनी इच्छा से कर रहा है तो यह अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। यदि गुरु भी धारण किया है और उस पर अपने आपको समर्पित नहीं किया तब भी इस अवस्था का आना सम्भव नहीं है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले इष्ट के आगे समर्पन आवश्यक है। शर्त यह है कि अपने आपको अर्पण कर दो। जिसका उपाय निम्न रूप से है।

(१) यदि गुरु नहीं मिला तो भी कोई बात नहीं उस मालिक को सबसे ऊँचा परम चेतन रूप मानकर उसके आगे अपना तन मन धन दे दो, कोई वस्तु भी शेष मत रखो।

(२) प्रातः व सायंकाल दोनों समय अपनी बुराइयों के लिए पश्चाताप करो। इतना पश्चाताप कि शरीर का एक २ अंग हिल जाए।

(३) सारे विश्व की भलाई के लिये दोनों समय प्रार्थना करो।

ऐसा कम से कम लगातार मन से ६ मास तक करते जाओ। इसका परिणाम निम्न रूप से होगा।

(१) प्रकति आपको पूर्ण रूप पुरुष से मेल करवा देगी। जिस के सत्संग से आपको शान्ति मिलना शुरू हो जावेगी और जीवन दिन प्रति दिन बदलता जायगा।

(२) वह पूर्ण पुरुष आप की प्रकृति के अनुसार आप को साधन आपकी मानसिक बृत्ति देखकर बता देगा विश्वास से वैसा प्रतिदिन करने पर शान्ति अवश्य मिलेगी।

(३) परमार्थ के साथ स्वार्थ भी बनता जायगा। गृहस्थ में उलझनें आवेंगीं क्यों कि उस शक्ल में कई जन्मों के सस्कार आगे आयेंगे किन्तु वह भी साथ-साथ ठीक होते जावेंगे।

(४) सहजावस्था बनती जावेगी ?

विशेष बात लिख देना चाहता हूँ कि पूर्ण पुरूष कभी भी गुरू नहीं बनता ! वह अपने आपको साधारण मनुष्य की भांति प्रगट करता है। विश्वास लाना शिष्य का काम है। पूर्णपुरूष की कुछ जानकारी निम्न बातों से हो सकती है

१- वह अहंकार से शून्य होगा।

२- वह हर समय प्रसन्न रहेगा।

३- वह मनुष्य की प्रकृति के अनुसार अभ्यास बताएगा एक जैसा नहीं।

४- उसके मुँह पर सदैव मुस्कराहट बरसेगी।

५- शान्ति उसके एक २ अँग से टपकेगी।

६- वह गम्भीर प्रकृति का होगा।

यदि मनुष्य इन बातों को जीवन में अपनाए तो सहजावस्था आ जाएगी। सहजावस्था में हृष्टापन की भावना रहती। सारे काम होते रहते हैं। इन्द्रियां अपना २ काम करती रहती हैं। सुरत उन को देखती रहती हैं उस में फँसती नहीं। इसका प्रति दिन अभ्यास करना चाहिए।

हजूर परम दयाल जी से प्रार्थना है कि जो जिज्ञासु इसे पढ़े वह सहज की ओर बढ़ता चला जाऐ।

सत्संग

परम सन्त मानव दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर,
होशियारपुर (पंजाब)

दिनांक ६-७-८२

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम।
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम॥
बसाकर गुरु मूरती मन के अन्दिर।
सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम॥
कभी तो उन्हें भी खबर हो रहेगी।
करुण राग अपना सुनाया करो तुम॥
वह दाता दयाल अवश्य देंगे दर्शन।
सदा ध्यान उनका लगाया करो तुम॥
भजन ध्यान से यह भटकने न पावे।
निठुर मन को निस दिन चिताया करो तुम॥
मिलेंगे गुरु अपने जीवन के साथी।
तड़प मन में दर्शन बढ़ाया करो तुम॥
मनो कामना होगी पूरन तुम्हारी।
राधास्वामी का नाम गाया करो तुम॥

———

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥
मस्तराम सुतं देवं फकीरचन्द पंडितम्।
परमं सन्तं दयालं च फकीरचन्दे जगद्गुरुम्॥

राधास्वामी !

सारे जगत के गुरु, निज धाम से आये हुए परम तत्व जो शरीर रूप में, पंडित मस्तराम जी के घर पैदा हुए परम सन्त परमदयाल

पंडित फकीर चन्द जी महाराज को मेरा नमस्कार है।
रूहानियत के विषय को समझने के लिये ज्ञान चाहिए अनुभव चाहिए जिज्ञासा चाहिये, जिज्ञासा क्या होत है? जानने की चाह। क्या जानने की चाह? यह जानने की तड़प कि मैं कौन हूँ? असल में मैं हूं कौन और कहां से आया हूँ? अगर यह सच्चो बात है कि मैं उस निज धाम व परमधाम से आया हूँ तो मैं यहां आकर के फँस क्यों गया? मन में ऐसे विचारों का आना जिज्ञासा कहलाता है।

लोग खाते हैं, पीते हैं, शरीर को अच्छा रखते है मनोरंज्जन करते हैं सिनेमा इत्यादि में जाते हैं, मन को संतुष्ट रखने के लिये हंसी मजाक भी करते हैं। शरीर को खुराक दी शरीर बढ़ गया, मन को खुराक दा तो मन को कुछ तसल्ली हो गई यद्यपि मन के मारे हुये बहुत है इस दुनियां में। मन आर शरीर का आनन्द लेने के बाद कुछ लोगों ने कोशिश की व करते हैं कि हमारी भी बुद्धि बढ़जाये इसके लिये पढ़ाई करते हैं लिखते पढ़ते हैं. बड़ा बड़ा किताबें पढ़ते हैं बड़े विद्वान हो जाते हैं, बड़े अफसर बन जाते हैं प्रोफेसर बन जाते हैं लेखक हो गये किताबें लिख डालां, दुनियां में मशहूरी हो गई यह सब कुछ हो गया। शरीर के लिऐ सब कुछ है मन के लिए भा घर के अन्दर मनोरजन के बहुत साधन हैं, टेलीविजन हैं बुद्धिशाली भी हैं बड़े विद्वान हैं परन्तु इससे हुआ क्या। क्या सच्चो शान्ति मिल सकती है? वही। लोग जानते नहीं है कि क्यों उन्हें चिन्ता हैं। क्यों सब कुछ होते हुए फिर भी उन्हें शान्ति नहीं हैं शान्ति नहीं हो सकती जब तक कि किसी को यह पता नहीं चल जाये कि हमारी असल जात क्या है मैं असल में हूँ कौन? यह भेद है।

असली जात या असली तत्व वो नहीं हैं जिसको आप खाना खिला-करके पालन पोषण करते है। मुझे बचपन की याद है, एक साधू आता था, हमारे घर के पास एक बड़ा सेठ रहता था। वह उसके सामने गाया करता था:-

खान खुराकाँ पहने पाशाकाँ जमदा बकरा पलना है तू।
मोती राम तू समझ प्यारे खाक बिच रलना है तू।।

यही बात सबके साथ होती है। लाखों करोड़ों जीव पैदा होते है खाते पीते हैं और मर जाते फिर जन्म लेना पड़ता है। असल में हम परम तत्व या जात हैं। यह ख्याल हमारे अन्तर होता है परन्तु हम इसको दबा देते हैं। असल जात जो हमारे अन्दर अजर अमर और अविनाशी है उसको दुख: व चिन्ता छू नहीं सकती, सुख का भी वहां कोई आभास नहीं होता ना हीं उस पर निन्दा व स्तुति का कोई असर होता है मगर उसके ऊपर शरीर के, मन के ख्यालात के और वातावरण के पर्दे पड़ गये, आपने हिन्दू के घर में जन्म लिया आपको ठाकुर जी या देवी इत्यादि की पूजा का अनुभव हुआ आप मुसलमान के घर पले तो अल्ला-२ किया नमाजें पढ़ीं रोजे रखे आप ईसाई के घर पैदा हुए ईमामसी की अंजील पढ़ते रहे। मान लीजिये आपको घर का असर नहीं हुआ आप कहीं बैठें बाते, सुनीं, किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ कहा वो आपके मस्तिष्क में आपके मन के ऊपर जो असर पड़ते गये वह क्या हुआ वह पर्दे पर पर्दे पड़ते गये ।यह पर्दे इस जन्म के और पिछले जन्म के होते हैं।

अपने असल रूप या परम तत्व, जात या नाम के लगने पर ही पर्दे होते हैं और पता लग जाता है कि यह मन का दायरा था। और फिर मनुष्य अभय हो जाता है। इन पर्दों को हटाने के लिये ही गुरू नाम देता है, नाम नहीं दे तो उसके स्वभाव के अनुसार काम देता है ताकि उस काम को करते -२ पर्दे जो है वो हट जायें।

गुरू लोग जो अमरीका जाते हैं सतसंग कराते हैं। अमरीकन इन हिन्दुस्तान से आये हुओं को हिन्दु कहते हैं। सन १९६२ में, ब्राह्मण होने के नाते मैं अमरीका में एक गिरजाघर में लैक्चर व सतसंग देने गया कि क्राईस्ट क्या होते है। जब मैंने उनकी जबान में क्राईस्ट का मतलब बताया तो वे गिरजाघर वाले बड़े हैरान हुये

उन्होंने कहा कि आप हमें यह बतायें कि क्या आप हमारे इस धर्म क्यों मानते हो ? अब मैं फंस गया । मैं ईसाई तो था नहीं । मैंने कहा मानता हूँ । मैंने उनकी किताब में से उनका एक शब्द पढ़ा वह शब्द था–All those who come before thee are thieves, I am the only way. अर्थात बाकी सब चोर हैं, मैं ही एक मात्र मालिक को मिलने का रास्ता हूँ । जो मेरे से आता है वही मालिक पाता है, बाकी नहीं पाता एक ब्राह्मण होते हुये मैंने ठोक बजाकर कहा है इसको मानता हूँ । वो बड़े हैरान हुये । मैंने कहा Christ is the only way क्राईस्ट ही एक मात्र रास्ता है मैं इसको मानता वे बड़े खुश हुये । परन्तु मैं आपको यह समझाना चाहता हूँ कि मसीह क्राईस्ट है क्या चीज । क्राईस्ट वह पाँच फुट छः इन्च लम्बा जैसस (Jesus) जो पैदा हुआ था । वो नहीं । वह जैसस था, यसु था वह क्राईस्ट बना । लोगों को यह भी पता नहीं कि क्राईस्ट है क्या क्राईस्ट कोई उसका नाम नहीं था इसी तरह से राधास्वामी कोई नाम नहीं है स्वामी जी महाराज का क्राईस्ट तो परम तत्व का नाम है वह क्रिस्ट शब्द से निकला है । क्रिस्ठ कहना तो चाहिये । क्रिस्ट वह क्राईस्ट कहते है यह एक नई बात आपको सुनाता हूं । कि तत्व और क्रिस्ठ एक ही चीज है कृष्ठा परम तत्व या जात का नाम है जो आकर्षण करता है । सब चीजें उसकी तरफ आकर्षित होती हैं दाता दयाल जी महाराज ने भी कहा है कि वह परम तत्व क्या है ? वह एक ऐसा जौहर है, एक ऐसा अनमोल हीरा है जिसकी किरणे जब निकलती हैं तो सृष्टि बनती है जब वो किरणे हटा लेता है तो सृष्टि का नाश हो जाता है:—

शब्द गुप्त तो रहा अनाम,
शब्द प्रगट धारिया नाम,

यह समझने की बात है । अब मैं सोचता हूं कि मैंने कैसे कह दिया उनको । वह बड़े खश सुये मैंने कहा कि क्राईस्ट ही एक मात्र

रास्ता है परन्तु क्राईस्ट है क्या ? तुम कहते हो जैसस क्राईस्ट व क्या समझते हो क्या क्राईस्ट उसकी जाति थी ? अधिक लोग यह समझते हैं कि क्राईस्ट उसके बाप का नाम है मैंने उन्हें समझाया कि क्राईस्ट है आत्मा, जात। जब वह कह रहा है बेचारा ! कि बाकी सब चोर हैं, क्या मतलब ? जो कुछ Thee अर्थात तुम्हारी जात के सामने आता है, तुम्हारे मन के विचार, तुम्हारा मन, तुम्हारी इच्छाएँ, तुम्हारा अहंकार, तुम्हारा शरीर सब चोर हैं, इनके पीछे जो तुम्हारा आत्मा है, कृष्ठा तत्व जात या परम तत्व हैं वह है। क्राईस्ट उसको जान जाओगे तो तब तुम मालिक के पास जाओगे,, उनकी आँख खुल गई। मैंने कहा इस किस्म का क्रिश्चियन (Christen) मैं हूँ तुम हो ऐसे क्रिस्यन ? कई तो रो पड़े कि हमें पता ही नहीं था जब वो कहते हैं हिन्दु आ गया तो मैं उन्हें कहता हूँ मैं हिन्दू नहीं हूँ मैं अनडू हूँ यह अंग्रेजी का शब्द है अनडू का मतलब है न डू अर्थात जो कुछ किया है या सीखा है उसको हटा देना अर्थात पर्दों को हटाना ! मैंने कहा तुम्हारे दिमाग के अन्दर संस्कार (Suggesstions and impressions) बैठे हैं इन सब के पर्दे हटा देना बिल्कुल नंगा हो जाना तब ही जात या परम तत्व व विशुद्ध आत्मा को जानना वह अनडू या हिन्दू होना है। बड़ी ऊँची बात है। इस बात को उन्होंने बहुत पसन्द किया। परमदयाल जी महाराज ने यही तो किया। अरे ! जो जात है उसमें कोई गुण नहीं लगाया जा सकता सभी गुण उससे निकलते जरूर हैं। यही बात महाराज जी भी कहते हैं। आप जरा समझो तो राही ऊपर जाना है तो इन पर्दों को हटाना पड़ेगा। अपने आपको अनडू करना पड़ेगा, जो कुछ सीखा है उसको मेटना पड़ेगा और परमतत्व या नाम को पकड़ना पड़ेगा तब मालिक के पास जाओगे। मैं क्यों कहता हूँ ? सब पढ़ने पढ़ाने के बाद जब मैं महाराज जी के पास गया तो तब जितनी पढ़ाई थी उसको हटा दिया। जब हटा दिया तब मुझे ज्ञान

हुआ कि मैं कौन हूँ और जब तक जो नाम नहीं मिलता तब तक शान्ति नहीं होती।

उस नाम को मिलने के लिये आपके अन्दर वह जिज्ञासा व तड़प बहुत जरूरी है और जब वह तड़प होगी तब आपको गुरु भी उसी वक्त मिलेगा। गुरु तब मिलता है जब आप उसको पाने के लिये तैयार होते हैं और फिर वह बाहरी गुरु आपको धीरे २ अनडू करेगा, आपके पर्दों को धीरे धीरे हटाता जायेगा, हटाता जायेगा, हटाता जायेगा, फिर जब मूल तत्व का ज्ञान आपके पास आ जायेगा तब आपको असली सच्चे नाम की प्राप्ति होगी और आप सब दुखों से मुक्त हो जाओगे, यह बडी पते की बात है। परम तत्व व जात को जानने के लिये नाम साधन भी है और साध्य भी है। साधन क्या होता है? साधन रास्ते को कहते हैं। नाम वहां पहुँचने का रास्ता भी है और नाम वह अवस्था भी है यहाँ पर आपको पहुँचना है। साधारण बोलने में दोनों का नाम नाम है। समझ कर जपो कि राधास्वामी का मतलब क्या है। यह रास्ता है और यहां पहुँचने का आपका उद्देश्य है उसका नाम भी राधास्वामी है। यह अवस्था है, हालत है :—

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम।
सफल अपना जीवन बनाया करो तुम॥

अपने जीवन को सफल बनाने के लिये, क्या सफल? कि जब हम यहाँ आ गये, हमारे पर शरीर के पर्दे पड़ गये, मन व बुद्धी के पर्दे चढ़ गये, जब इनको हटायेंगे फिर अपना जीवन सफल होगा अर्थात असली फल पर पहुँचेगा आदमी। इसके लिये नाम को समझ कर सदा नाम से लौ लगाया करो।

महाराज जी ने तो अन्त में कह दिया कि तुम नियत साफ रखो नियत साफ करोगे तो भी पर्दे हटेंगे। जब नियत साफ हो जायेगी तब नाम का असली मतलब समझ कर जपोगे तभी जीवन सफल

हो जायेगा ।

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम ।

इसका मतलब एक और भी है । नाम जो मन और बुद्धि अलग चीज है । परन्तु सबके अन्दर मौजूद है जब इस नाम से लौ लगी हुई है तो ही किसी के शरीर से लौ नहीं लगेगी और न किसी के शरीर से घृणा होगी तब अपने आप ही सत गति हो जायेगी । नाम से मेरी लौ लगी हुई है तो मेरी कोई बेसली कर देता है तो क्या हुआ । मैं क्यों उसका जबाव दूँगा, नाम तो मन से ऊँचा है तो तो नाम से लौ लगने का मतलब उसका निरन्तर स्मरण करना, समझना और हर कदम पर उसी का ध्यान करके अपना व्यवहार करना है, इस तरह करने से व्यक्ति कभी कोई गल्ती नहीं खा सकता महाराज जी ने कहा कि चौदह आने मैं नाम में रहता हूँ, तों आप अगर चार आने रहते हैं तब भी ठीक है । धीरे २ उस अन्तिम अवस्था पर पहुँचने के लिये नाम दिया भी जाता है । राधास्वामी नाम क्यों ? क्योंकि राधास्वामी नाम का मतलब भी ऊँचा है और हमारे परम गुरु महाराज जी ने जब स्वयं राधास्वामी नाम को लेकर के परम तत्व को पहचान कर और हमें दिखाकर महासमाधि में चले गये तो हम उसी नाम को क्यों नहीं जपें । । इसलिये राधास्वामी नाम के स्मरण का महत्व है, नाम के स्मरण का मतलब नाम रास्ता है और नाम को समझने का मतलब नाम आखिरी मंजिल है ।

जब आप नियत साफ करके चल रहे हैं, किसी को नुकसान नहीं पहुँचा रहे हैं तो असल में आप उस मनुष्य को पूर्ण मान कर चल रहे हो । इसलिए आप इस तरह से उसके अन्दर जो नाम है परम तत्व है, उसको पूज रहे हैं । इसलिये भी आपका मन साफ होगा और आप धीरे २ उसको समझ कर उस परम अवस्था पर भी पहुँच जायेंगे इसलिये नीयत का साफ होना जरूरी शर्त है ।

यह एक ऐसा कदम है जिस कदम को उठाकर फिर आगे बढ़ता है आदमी। नीयत साफ के बिना लोग केवल शरीर मन और अहंकार तक ही रह जाते हैं। अहंकार से आगे जाते नहीं इसलिये उनको अपने निज रूह का पता नहीं होता। इसलिये सतसग की जरूरत होती है, सनसंग में ज्ञान को समझ कर उस पर अमल करना जरूरी होता है। इस तरह से मनुष्य सतसंग के प्रताप से इन्सानियत के जरिये रूहानियत के मंजिले मकसूद पर पहुँच जाता है।

—+—

मंगल कामना

❋ श्री एम० एल० गुप्ता, देवास, (म० प्र०) ने अपने पुत्र श्री देवेन्द्र गोयल के शुभ विवाहोपलक्ष पर 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ ३१) का अनुदान भेजा है। मालिक से कामना है वह वर-वधू को दीर्घायु प्रदान करे।

❋ श्री अमर चन्द भाटिया, कैंनाल कालौनी अमृतसर ने १०) रु० 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ भेजे हैं। आप समय २ पर पत्रिका की सहायतार्थ कुछ न कुछ भेजते हैं। मालिक से हम उनके दीर्घायु एवं उच्च जीवन की कामना करते हैं।

॥ मनुष्य बनो ॥

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम		श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ अक्टबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

पुस्तक

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाहो' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 900

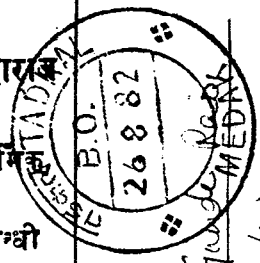

श्री Yampally Gude Reddy

V- Tangi (K)

P.O Tadkal via Pitlam

Medak

प्र० स० सम्पादक — महेशचन्द्र मीतल

सह सम्पादक

व्यवस्थापक व प्रकाशक

श्रीमती सुधा मीतल

शिव भवन, लेखराज नगर,

अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh